

# प्रश्नपत्र विकसित करने के गाइडलाइन



# प्रश्नपत्र विकसित करने के गाइडलाइन<sup>1</sup>

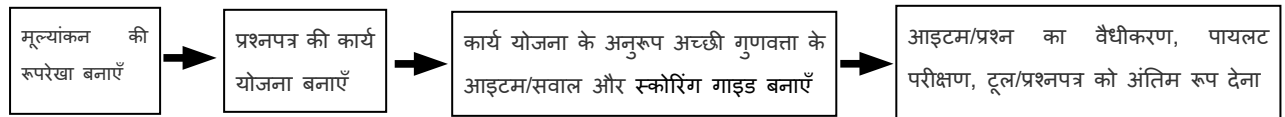
## प्रस्तावना

प्रश्नपत्र मूल्यांकन के लिए सबसे ज़्यादा इस्तेमाल किया जाने वाला टूल है। प्रश्नपत्रों का इस्तेमाल योगात्मक मूल्यांकन के लिए किया जा सकता है। मिसाल के लिए, किसी यूनिट या सेमेस्टर या साल के अंत में मूल्यांकन करने के लिए। इसका इस्तेमाल नैदानिक उद्देश्य से भी किया जा सकता है – मसलन, कोई नई अवधारणा सिखाने से पहले यह समझने के लिए कि विद्यार्थी पहले कितना कुछ सीख चुका है। शोध संस्थान और मैदानी काम करने वाले संस्थान अपने कार्यक्रमों की प्रभावोत्पादकता का मूल्यांकन करने के लिए प्रश्नपत्र विकसित कर सकते हैं। कोई हस्तक्षेप कितना प्रभावशाली रहा यह ट्रैक करने के लिए इसका इस्तेमाल उस हस्तक्षेप से पहले या उसके बाद किया जा सकता है।

एक अच्छा प्रश्नपत्र विकसित करना एक कला है। इसके लिए जिस विषय का मूल्यांकन किया जा रहा है उसकी समझ के साथ-साथ बच्चे उस विषय को किस तरह सीखते हैं, अच्छे सवाल बनाने के सिद्धांत और विद्यार्थियों के योग्यता स्तर के अनुरूप एक संतुलित प्रश्नपत्र बनाने की प्रक्रिया की समझ होनी भी ज़रूरी है। इसके लिए ज़रूरी है कि प्रश्नपत्र बनाते समय कुछ बुनियादी चरण ध्यान में रखे जाएं। मूल्यांकन इसलिए किया जाता है ताकि बच्चों के सीखने के स्तर के बारे में जानकारी जुटाई जा सके। इस जानकारी का इस्तेमाल विद्यार्थियों में व्याप्त भ्रामक जानकारी की पहचान करने, शिक्षार्जन की कमियों को चिह्नित करने, सीखने के स्तर की जानकारी देने, प्रमाणन करने और भावी अकादमिक कार्यक्रमों या छात्रवृत्तियों में चयन के लिए किया जाता है। एक उच्च गुणवत्ता का मूल्यांकन विद्यार्थियों में सीखने के बारे में अधिकाधिक जानकारी प्रदान करता है। वैधता और विश्वसनीयता मूल्यांकन में गुणवत्ता की दो विशेषताएँ हैं।

# प्रश्नपत्र विकसित करने की प्रक्रिया

किसी प्रश्नपत्र को विकसित करने के चार स्पष्ट चरण हैं। मूल्यांकन के उद्देश्य और टेस्ट जिस पैमाने पर आयोजित किया जाना है उसके अनुसार इन चरणों में संशोधन किए जा सकते हैं।



चित्र 1. प्रश्नपत्र विकसित करने के चरण

## चरण 1 – मूल्यांकन की एक रूपरेखा तैयार करना

मूल्यांकन की रूपरेखा तैयार करना किसी प्रश्नपत्र के निर्माण का पहला कदम है। मूल्यांकन रूपरेखा से क्या टेस्ट करना है और क्या नहीं यह निर्णय लेने का एक सुस्पष्ट आधार सुनिश्चित होता है। रूपरेखाएँ टेस्ट के उद्देश्य पर आधारित होती हैं – चाहे वह योगात्मक मूल्यांकन हो, कोई मानकीकृत प्रमाणन परीक्षा हो, नैदानिक टेस्ट हो या कुछ और। ज़्यादातर मामलों में इसका विकास एक टेस्ट कॉन्स्ट्रक्ट या रूपरेखा बना कर किया जाता है। इसमें पाठ्यचर्या में से उन मूल्यांकन-योग्य योग्यताओं/परिणामों को सूचीबद्ध और व्यवस्थित किया जाता है जिनका टेस्ट लेना है। मूल्यांकन की रूपरेखा में सीखने के परिणामों, विषयवस्तु के क्षेत्रों, विशिष्ट योग्यताओं, और कौशलों और/या रुझानों को शामिल किया जाता है जिनका मूल्यांकन किया जाना है।

### 1. टेस्ट कॉन्स्ट्रक्ट/रूपरेखा को परिभाषित करना

यह वो सैद्धांतिक विशेषता है जिसका मापन टेस्ट के ज़रिए किया जाता है। (एईआरए स्टैण्डर्ड, एनसीएमई, 1999)। यह मूल्यांकन के उद्देश्य पर आधारित होता है। टेस्ट रूपरेखा का स्तर विशिष्ट पाठ्यचर्यागत अपेक्षाओं, उस कक्षा के अनुकूल परिणामों और विद्यार्थियों के योग्यता स्तर के अनुसार होना चाहिए। गणित की ऐसी तीन स्थितियों की समीक्षा करते हैं, जिनमें टेस्ट के उद्देश्य के अनुसार टेस्ट रूपरेखा अलग-अलग स्तर की हो सकती है।


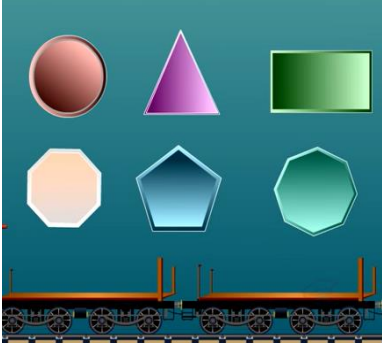
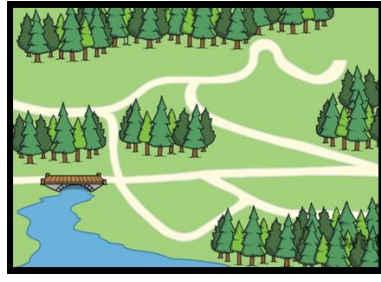
<p><b>स्थिति 1:</b></p> <p>उद्देश्य: योगात्मक मूल्यांकन; टर्म एंड मूल्यांकन। टेस्ट रूपरेखा: गणितीय योग्यता।</p> <p>इस टेस्ट रूपरेखा के लिए चयनित विषयवस्तु के क्षेत्र एनसीईआरटी के प्राथमिक स्तरीय गणित से लिए गए हैं।</p>	<p>संख्या की पहचान</p> <p>मापन</p> <p>ज्यामिति</p> <p>डेटा हैंडलिंग</p> <p>पैटर्न</p>
--	---

<p><b>स्थिति 2:</b></p> <p>उद्देश्य: योगात्मक मूल्यांकन; यूनिट या सेमेस्टर के अंत में होने वाला मूल्यांकन। टेस्ट रूपरेखा: संख्या योग्यता।</p> <p>इस टेस्ट रूपरेखा के लिए चयनित विषयवस्तु के क्षेत्र एनसीईआरटी के प्राथमिक स्तरीय गणित से लिए गए हैं।</p>	<p>संख्या की अवधारणा</p> <p>जोड़ व गुणा</p> <p>घटाना व भाग देना</p> <p>समस्या फ्रेम करना</p> <p>समस्या सुलझाना</p>
--	--

<p><b>स्थिति 3:</b></p> <p>उद्देश्य: नैदानिक मूल्यांकन; टेस्ट रूपरेखा से जुड़े नए विषय/अवधारणा को शुरू करने से पहले।</p> <p>टेस्ट रूपरेखा: डेटा हैंडलिंग</p> <p>इस टेस्ट रूपरेखा के लिए चयनित विषयवस्तु के क्षेत्र एनसीईआरटी के माध्यमिक स्तरीय गणित से लिए गए हैं।</p>	<p>डेटा रेकॉर्डिंग</p> <p>डेटा टेबुलेशन</p> <p>डेटा रीप्रेजेंटेशन</p> <p>डेटा की व्याख्या</p> <p>डेटा से अनुमान</p>
---	---

—चित्र 2 - टेस्ट रूपरेखा का नमूना, गणित, प्राथमिक स्तर—

उपरोक्त सभी स्थितियों में टेस्ट विकसित करने वाले टेस्ट के उद्देश्यों और विद्यार्थियों की योग्यता के अनुसार विषयवस्तु के अलग-अलग क्षेत्रों से चयनित सवालों के अनुपात में फेर-बदल कर सकते हैं। टेस्ट की रूपरेखा अंतर्विषयक या इंटर-डिसीप्लिनरी भी हो सकती है - यानी उसकी विषयवस्तु अलग-अलग विषयों से ली जा सकती है।

टेस्ट रूपरेखा: स्थानिक समझ		
भाषा- स्थान से सम्बन्धित शब्दों की समझ, जैसे कि, ऊपर, नीचे, दूर, पास, आदि।	गणित- द्वि-आयामी व त्रिआयामी आकारों की समझ	पर्यावरण विज्ञान- किसी स्थान विशेष के स्थानिक पैटर्नों को समझना, जैसे कि, नदी, पेड़, आदि।
		

चित्र 3: बहु-विषयी टेस्ट रूपरेखा का नमूना

## 2. रूपरेखा की विस्तृत योजना बनाना

एक बार टेस्ट रूपरेखा तय हो जाए और विषयवस्तु क्षेत्र मोटे तौर पर चिह्नित हो जाएँ, तो टेस्ट विकसित करने वाले रूपरेखा के दूसरे आयामों की विस्तृत योजना बना सकते हैं, जैसे कि उप-क्षेत्र तय करना (अगर हैं तो), अधिगम परिणाम, संकेतक, ज्ञानात्मक स्तर, आदि। इसे कितना विस्तृत रखना है यह पूरी तरह टेस्ट विकसित करने वाले व्यक्ति पर निर्भर करता है। यहाँ विचार यह है कि ज़्यादा से ज़्यादा सूचना दे दी जाए जिससे प्रश्न लिखने के लिए ज़रूरी रूपरेखा विकसित करने में मदद मिले (ज़्यादा विस्तृत जानकारी के लिए अनुलग्नक देखें)।

उदाहरण, रूपरेखा 1

विषयवस्तु के क्षेत्र और उप-क्षेत्र	अधिगम के परिणाम	संकेतक	ज्ञानात्मक स्तर

टेस्ट विकसित करने वाले इसको और विस्तार देते हुए इसमें सवालों की संख्या और सवालों के सम्भावित संदर्भ के ब्यौरे भी जोड़ सकते हैं,

उदाहरण, रूपरेखा 2

विषयवस्तु के क्षेत्र और उप-क्षेत्र	अधिगम के परिणाम	संकेतक	ज्ञानात्मक स्तर	सवालों की संख्या	संदर्भ/सवाल में इस्तेमाल किया जाने वाला उत्प्रेरक

### 3. मूल्यांकन की रूपरेखा की समीक्षा

रूपरेखा बन जाने के बाद निम्नांकित मापदंडों पर उसकी समीक्षा करना उपयोगी रहेगा-

1. क्या विषयवस्तु के क्षेत्र टेस्ट कॉन्स्ट्रक्ट का समुचित प्रतिनिधित्व करते हैं? (क्षेत्र प्रतिनिधित्व)
2. क्या विषयवस्तु का ऐसा कोई क्षेत्र या ऐसा कोई अधिगम परिणाम है जो टेस्ट कॉन्स्ट्रक्ट के मूल्यांकन के लिए प्रासंगिक नहीं है? (क्षेत्र प्रासंगिकता)
3. क्या अधिगम परिणाम विभिन्न ज्ञानात्मक स्तरों के बीच वितरित हैं?

## चरण 2 - योजना का निर्माण

मूल्यांकन की रूपरेखा के आधार पर टेस्ट का विकास करने वाले एक कार्य योजना बनाते हैं। यह एक ऐसा दस्तावेज़ होता है जिसमें टेस्ट से सम्बन्धित सभी प्रासंगिक जानकारियाँ एक तालिका के रूप में दी हुई होती हैं। यह कार्य योजना आमतौर पर एक क्रियाशील दस्तावेज़ भी होता है जिसमें आइटम निर्माण की प्रक्रिया में बदलाव भी किए जाते हैं। इस कार्य योजना में शामिल सूचनाएँ विषयवस्तु के वह क्षेत्र जिनका परीक्षण किया जाएगा; विशिष्ट अधिगम परिणाम और उनके सूचकांक जिनका परीक्षण किया जाएगा; टेस्ट आइटम के स्वरूप (बहु-वैकल्पिक, संक्षिप्त लिखित जवाब, आदि); परीक्षण की अवधि; विषयवस्तु के क्षेत्र व ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के प्रतिशत के समुच्चय से जुड़ी होती हैं। इसके खाके का एक नमूना अनुलग्नक में दिया गया है।

## चरण 3 – अच्छी गुणवत्ता के आइटमों/प्रश्नों व स्कोरिंग गाइडों का विकास

टेस्ट का निर्माण करने वाले व्यक्ति के रूप में आप परीक्षण में इस्तेमाल किए जाने वाले आइटम के स्वरूप या प्रकार के बारे में निर्णय ले सकते हैं। मोटे तौर पर आइटमों का स्वरूप दो प्रकार का होता है। चयनित प्रतिक्रिया (selected response) वाले प्रश्न, जैसे कि बहु-वैकल्पिक प्रश्न, या सही/ग़लत के सवाल, जहाँ विद्यार्थी को दिए हुए विकल्पों में से सही विकल्प का चयन करना होता है। दूसरा है, निर्मित प्रतिक्रिया (constructed response) वाले प्रश्न- जहाँ विद्यार्थी को सही जवाब खुद ही देना होता है। ये जवाब किसी निबन्धात्मक प्रश्न के जवाब में दिया गया एक शब्द का उत्तर भी हो सकता है। परीक्षण आइटमों का विकास करते समय गुणवत्ता के कुछ मापदण्डों का खयाल रखना ज़रूरी होता है:

1. **स्पष्ट भाषा का इस्तेमाल**- प्रश्न की भाषा सरल व सुस्पष्ट होनी चाहिए। दिए गए निर्देश स्पष्ट होने चाहिए और कोई भी विषयेतर व अप्रासंगिक सूचना प्रश्न में नहीं होनी चाहिए। इस तरह की अतिरिक्त सूचना से विद्यार्थी महज़ भ्रमित होंगे और जिन परिणामों का परीक्षण किया जाना है उसमें कोई वास्तविक लाभ नहीं होगा। यह भी ज़रूरी है कि जिस भाषा का इस्तेमाल किया गया है उसमें विद्यार्थी के प्रति किसी तरह का पूर्वाग्रह अथवा कोई अन्य नीति-शास्त्रीय समस्या न हो। वह सभी बच्चों के प्रति संवेदनशील व समावेशी होनी चाहिए। प्रश्न की शब्दावली भी बच्चों के परिवेश से जुड़ी हुई व उनकी आयु के अनुकूल होनी चाहिए।
2. **बहु-वैकल्पिक प्रश्नों में इस्तेमाल किए जाने वाले विकर्षकों अथवा विकल्पों की गुणवत्ता** - यह ज़रूरी है कि बहु-वैकल्पिक सवालों में इस्तेमाल किए जाने वाले विकर्षक एक सम्भावित उत्तर हों और जिस अवधारणा का परीक्षण किया जा रहा है उससे जुड़ी आम भ्रान्तियों का प्रतिनिधित्व करते हों। कई बार विकर्षक अतार्किक होते हैं, अथवा वे साफ़तौर पर ग़लत जवाब होते हैं, या ग़लत/सही विकल्पों के ही उपवर्ग होते हैं। ऐसे मामलों में सही जवाब बिल्कुल साफ़ जाहिर होता है जिससे प्रश्न की गुणवत्ता व कठिनाई का स्तर प्रभावित होता है।
3. **उत्प्रेरक सामग्री का चयन**- उत्प्रेरक सामग्री उन चित्रों, ग्राफ़िक्स, तालिकाओं, नक्शों, तस्वीरों आदि को कहते हैं जिनका इस्तेमाल प्रश्न में किया गया है। इस तरह की सामग्री से विद्यार्थी को प्रश्न का उत्तर देने में मदद मिलती है। इसलिए यह ज़रूरी है कि वे स्पष्ट हों, उनके अर्थ में कोई दोहरापन न हो, तथ्यात्मक व अवधारणात्मक रूप से सही हों, और सवाल के लिए प्रासंगिक हों। ग़ैरज़रूरी चित्रों से प्रश्न की गुणवत्ता में कोई फ़र्क नहीं पड़ता और इनसे बचा जाना चाहिए।
4. **तथ्यात्मक व अवधारणात्मक रूप से सही होना** - प्रश्न का तथ्यात्मक व अवधारणात्मक रूप से सही होना ज़रूरी है। यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि प्रश्न महज़ सूचनाओं या तथ्यों को याद रख पाने की क्षमता की बजाय योग्यता व कौशल का परीक्षण करें।
5. **स्कोरिंग गाइड या मार्किंग योजना** उतनी ही ज़रूरी है जितने कि प्रश्न। सवालों में, खासतौर से वे जिनमें समझ और ज्ञानात्मक स्तरों का मूल्यांकन किया जाता है, यह ज़रूरी होता है कि विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया में विभिन्नता हो। पूरी तरह से सही, आंशिक तौर पर सही और आंशिक रूप से सही जवाबों के विभिन्न स्तरों की गुंजाइश होनी चाहिए। साथ ही, स्कोरिंग गाइड सम्बन्धित प्रश्न के ज्ञानात्मक स्तर से मेल खाना चाहिए। अगर कोई सवाल किसी अवधारणा के व्यावहारिक उपयोग के परीक्षण के लिए है

तो स्कोरिंग गाइड में ऐसे व्यावहारिक उपयोगों की सम्भावित प्रतिक्रियाओं के उदाहरण दिए जाने चाहिए। किसी भी सूरत में स्कोरिंग गाइड महज़ एक संकेत ही देती है – उसमें सभी सम्भावित प्रतिक्रियाओं की विस्तृत जानकारी नहीं हो सकती (अनुलग्नक में नमूना दिया हुआ है)।

## **चरण 4 – प्रश्नपत्र का वैधीकरण करना व अंतिम स्वरूप देना**

परीक्षण के उद्देश्य के आधार पर, उपकरण वैधीकरण (tool validation) की कई प्रक्रियाएँ अपनाई जा सकती हैं। अगर यह एक मानकीकृत परीक्षण है तो टूल का पायलेट परीक्षण करना उचित होगा। पायलेट परीक्षण का अर्थ है कि कुछ नमूना प्रश्नों या पूरे टेस्ट पेपर को विद्यार्थियों के एक प्रतिनिधि समूह को हल करने के लिए देना। इस समूह को उन विद्यार्थियों का प्रतिनिधि होना चाहिए जिनका अंततः परीक्षण किया जाना है। पायलेट परीक्षण में यह देखना चाहिए कि क्या विद्यार्थियों को प्रश्न पढ़ने में, या उसकी भाषा अथवा उत्प्रेरक सामग्री को को समझने में कोई परेशानी आ रही है। टेस्ट पेपर को पूरा हल करने के लिए लिए गए समय को भी ध्यान में रखना चाहिए। इससे अंतिम टेस्ट की अवधि तय करने में मदद मिलती है। टूल वैधीकरण का एक और तरीका है पैनल चर्चा। इसमें विषय विशेषज्ञ, शिक्षक और मूल्यांकन विशेषज्ञ प्रश्नपत्र की समीक्षा करते हैं। पैनल चर्चा में इस पर ध्यान दिया जाता है कि प्रश्नपत्र सटीक हो, विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक स्तर के अनुरूप हो, विविध क्रिस्म के शिक्षार्थियों के अनुसार संतुलित हो, उसकी भाषा, तस्वीरें, चित्र आदि स्पष्ट हों और प्रश्नों में दोहराव न हो। प्रश्नों के साथ-साथ स्कोरिंग गाइड/मार्किंग योजना की भी समीक्षा की जाती है ताकि यह देखा जा सके कि वे सुविस्तृत हों। इस प्रक्रिया को स्कूल-आधारित योगात्मक मूल्यांकनों के लिए अपनाया जा सकता है – किसी कक्षा/विषय के शिक्षक मिलजुल कर इस प्रश्नों की समीक्षा कर सकते हैं। अगर प्रश्नपत्रों का विकास मानकीकृत मूल्यांकन के लिए हो रहा है तो आइटम वैधीकरण की विकसित उन्नत तकनीकें, मसलन क्लासिकल टेस्ट सिद्धांत या आइटम अनुक्रिया सिद्धांत का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। ये सिद्धांत आइटम-स्तरीय गुणवत्ता सूचकांक मुहैया कराके प्रत्येक प्रश्न की कार्यकुशलता जाँचना सम्भव बनाते हैं और साथ ही परीक्षण की व्यापक विश्वसनीयता के पूर्वानुमान में भी मदद करते हैं।

एक बार प्रश्नपत्र पायलेट परीक्षण या पैनल चर्चा से गुज़र चुके हों और सभी प्रासंगिक सुझावों को उसमें शामिल किया जा चुका हो तो व टूल या प्रश्नपत्र इस्तेमाल के लिए तैयार होता है।



## सार-संक्षेप

प्रश्नपत्र के विकास की प्रक्रिया का काम व्यवस्थित ढंग से किया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्रश्नपत्र मूल्यांकन का एक वैध व विश्वसनीय उपकरण बन सके उसके सभी चरण सुसंगत होने ज़रूरी हैं। प्रश्नपत्र विकसित करने का काम पुनरावृत्तीय होता है और उसमें टेस्ट कॉन्स्ट्रक्ट की, उसके खाके के विभिन्न तत्वों की, कार्य योजना की व खाके से उसकी संगति की तथा प्रश्नों व स्कोरिंग गाइडों की गुणवत्ता की लगातार निगरानी व समीक्षा की ज़रूरत होती है। किसी स्कूल में शिक्षकों के बीच या किसी संस्थान में विषय विशेषज्ञों के बीच सहभागिता से उच्च गुणवत्ता के प्रश्नपत्र विकसित हो सकते हैं। लेकिन एक अच्छे प्रश्नपत्र को विकसित करने की सबसे ज़रूरी शर्तें ये हैं - जिस विषय का परीक्षण किया जा रहा है उसकी अच्छी समझ, उस विषय के शिक्षण के पाठ्यचर्यागत उद्देश्य, उस विषय व कक्षा से जुड़े अधिगम परिणाम, जिन अवधारणाओं का परीक्षण किया जा रहा है उनमें विद्यार्थियों की आम भ्रान्तियों की समझ और मूल्यांकन डिज़ाइन का ज्ञान।

## अनुलग्नक

### 1. मूल्यांकन की रूपरेखा, टेस्ट कॉन्स्ट्रक्ट का नमूना: भाषाई कौशल (प्राथमिक स्तर)

विषयवस्तु क्षेत्र	अधिगम परिणाम	संकेतक	ज्ञानात्मक स्तर	प्रश्नों की संख्या	संदर्भ/उत्प्रेरक
1. मौखिक अभिव्यक्ति	1.1 कविता पाठ, चुटकुले व पहेलियाँ कहने की क्षमता	1.1.1 जानी-पहचानी कविता का हाव-भाव के साथ वाचन 1.1.2 अपरिचित कविता का वाचन जो सम्भवतः घर पर सुनी गई है 1.1.3 उचित उच्चारण का इस्तेमाल (विराम चिह्न पर रुकना, विस्मय बोधक या प्रश्नवाचक चिह्न के अनुरूप उच्चारण)	याद रखना/समझना  याद रखना/समझना  समझना/इस्तेमाल करना	3- मौखिक गतिविधियाँ	स्कूल में सीखी कोई जानी-पहचानी कविता
2. पठन बोध - कहानी	2.1 कहानी का स्वतंत्र पाठन और मुख्य विचारों का संक्षेप में प्रस्तुतिकरण	2.1.1 कक्षा के उपयुक्त पाठ का धाराप्रवाह पठन 2.1.2 कहानी पर आधारित पुनर्चना व व्याख्या सम्बन्धी सवालों का जवाब देना 2.1.3 अपने शब्दों (मौखिक, लिखित अथवा चित्रात्मक) में कहानी का संक्षेपीकरण करना	समझना  समझना  समझना	5 आइटम	नियोजित पाठ्यपुस्तक से। कहानी;। अपरिचित कहानी जिसका विषय विद्यार्थी के अनुरूप हो, भाषा उनकी आयु/कक्षा के अनुसार हो

3. लिखित/रचनात्मक अभिव्यक्ति	3.1 दृश्य संकेतों के आधार पर छोटे पैराग्राफ लिखना	3.1.1 दृश्य संकेतों के आधार पर 4-5 वाक्यों का पैरा लिखना 3.1.2 पैराग्राफ को उपयुक्त शीर्षक दे पाना 3.1.3 दृश्य संकेतों को उचित विषय दे पाना	रचनात्मकता  व्यवहार/विश्लेषण  व्यवहार/विश्लेषण	2 आइटम	दृश्य संकेतों के 2-3 सीक्वेंस, विद्यार्थी एक का चयन कर के दिया गया काम कर सकती है
------------------------------------	---	---	--	--------	---

## 2. कार्य योजना का नमूना

विषयवस्तु क्षेत्र	ज्ञानात्मक स्तर						प्रश्नों की संख्या
	याद रखना	समझना	व्यवहार	विश्लेषण	मूल्यांकन	रचना	
1. मौखिक अभिव्यक्ति	1	1	-	-	-	-	2 (15%)
2. पठन बोध- कहानी	-	1	1	1	1	-	4 (35%)
3. पठन बोध- अखबार की रपट	1	1	1	1			4 (35%)
4. लिखित/रचनात्मक अभिव्यक्ति	-	-	-	-	-	2	2 (15%)
प्रश्नों की संख्या	2	3	2	2	1	2	12 प्रश्न
अंक	2*1=2	3*1= 3	2*2=4	2*3=6	1*3=3	2*3.5=7	25 अंक

### 3. प्रश्नों/आइटमों व टूल समीक्षा/वैधीकरण मानदण्डों की चेक लिस्ट

#### 1. सरल, स्पष्ट व साफ़ भाषा

- आइटमों में इस्तेमाल की गई भाषा परीक्षण करने वाले शिक्षकों को समझ में आनी चाहिए
- विषय के अनुकूल तकनीकी शब्दावली का प्रयोग किया जाना चाहिए और प्रश्नों के लिए दिए गए निर्देश स्पष्ट व साफ़ होने चाहिए
- व्याकरण या वर्तनी की अशुद्धियाँ नहीं होनी चाहिए
- किसी जाति/वर्ग/जेंडर/धर्म/भौगोलिक क्षेत्र/जातिय समूह के प्रति पक्षपातपूर्ण, असंवेदनशील या पूर्वाग्रहयुक्त भाषा नहीं होनी चाहिए

#### 2. परिचित संदर्भ

- प्रश्नों का संदर्भ "वास्तविक दुनिया/कक्षा के परिदृश्य" होने चाहिए जिनका सामना शिक्षक अक्सर करते हैं

#### 3. तथ्यात्मक रूप से सटीक व प्रासंगिक ग्राफ़िक्स का इस्तेमाल

- चित्र व ग्राफ़ स्केल के अनुसार होने चाहिए (या यह स्पष्ट लिखा होना चाहिए कि 'स्केल के अनुसार नहीं')
- चित्र व ग्राफ़ में सही व पूरे लेबल लगे होने चाहिए
- ग्राफ़िक या चित्र उस प्रश्न को हल करने या उत्तर देने के लिए ज़रूरी होना चाहिए और उसकी समुचित व्याख्या व प्रत्यक्ष संदर्भ उस आइटम में दिया होना चाहिए
- नीतियों, कार्यक्रमों या अन्य आंकड़ा-आधारित सवालों में तथ्य सटीक होने चाहिए

#### 4. उच्च-स्तरीय ज्ञानात्मक प्रश्न

- आइटमों का ज्ञानात्मक स्तर अवधारणात्मक समझ, व्यवहार व दूसरे उच्च-स्तरीय वैचारिक कौशलों के अनुरूप होना चाहिए
- ऐसे तथ्यात्मक सवाल जो सूचनाओं को याद रखने की क्षमता का परीक्षण करते हों कम-से-कम होने चाहिए
- यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि प्रश्नों का ज्ञानात्मक स्तर अधिगम परिणामों/संकेतकों के अनुरूप हो

#### 5. आइटमों की कठिनाई का वितरण

- आइटम अलग-अलग कठिनाई स्तर के होने चाहिए
- प्रश्नपत्र में 30% आसान, 40% औसत और 30% कठिन आइटम होने चाहिए

#### 6. बहु-वैकल्पिक सवाल

##### (क) आइटम स्टेम (Item Stem)

- आइटम को स्पष्ट व साफ़ बनाने के लिए उसमें पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए
- उसमें कोई बाहरी/अनावश्यक जानकारी नहीं होनी चाहिए (ऐसी जानकारी से विद्यार्थी भ्रमित होकर गलत जवाब दे सकते हैं)
- नकारात्मक शब्दों से बचा जाना चाहिए – जैसे **नहीं, सबसे खराब, अलावा**, आदि। अगर इनका इस्तेमाल अत्यावश्यक हो तो इन शब्दों को उभारना चाहिए। अगर आइटम स्टेम में नकारात्मक शब्द है तो उत्तर में सकारात्मक विकल्प ही होने चाहिए – दोहरे नकारात्मक शब्दों का इस्तेमाल न करें

### (ख) प्रतिक्रिया के विकल्प (विकर्षक)

- सिर्फ़ एक ही सही या उपयुक्त जवाब होना चाहिए
- सही उत्तर सभी विकल्पों (क, ख, ग, घ) में बराबर वितरित होना चाहिए ताकि उसका आसानी से अंदाज़ा न लगाया जा सके
- सभी चार प्रतिक्रिया विकल्प एक-दूसरे से स्वतंत्र होने चाहिए। मिसाल के लिए, प्रतिक्रिया के विकल्प दूसरे विकल्पों का उप-समुच्चय नहीं होना चाहिए। मिसाल के लिए, एक विकल्प 'नदी' है तो दूसरा विकल्प 'जल स्रोत' या एक विकल्प 'एसिड' है तो दूसरा 'सल्फ्यूरिक एसिड' नहीं होना चाहिए
- 'इनमें से कोई नहीं' या "उपरोक्त सभी" जैसे विकल्पों से बचा जाना चाहिए
- सामान्य गलतियाँ या भ्रान्तियाँ विकल्प में रखी जा सकती हैं
- प्रश्न में ऐसे शब्द नहीं होने चाहिए जिससे उत्तर का अनुमान लगाने में मदद मिलती हो/ अन्य विकर्षकों की तुलना में अत्यधिक लम्बी या छोटी प्रतिक्रिया से बचना चाहिए

### 7. विवरणात्मक सवाल/निर्मित प्रतिक्रिया

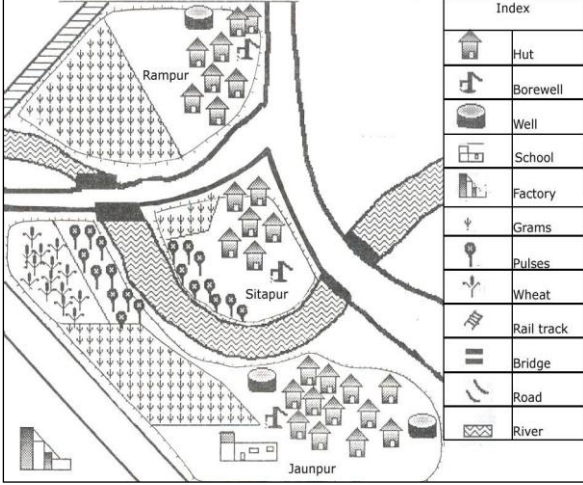
- स्कोरिंग रूपरेखा में सभी सम्भावित सही विकल्प होने चाहिए
- हर मापदण्ड के लिए दिए गए प्रदर्शन स्तर का उचित विवरण या संकेत दिया जाना चाहिए

### 8. सम्पूर्ण टूल

- टूल में सवालों का क्रम सरल से कठिन की तरफ़ होना चाहिए
- चित्रों आदि वाले सवाल गहन शब्दों वाले सवालों के बीच संतुलित रूप से वितरित होने चाहिए
- प्रश्नों का ज्ञानात्मक स्तर के अनुरूप संतुलित वितरण होना चाहिए
- फ़ॉन्ट साइज़ और स्पेस उपयुक्त होना चाहिए ताकि प्रश्नपत्र अनावश्यक लम्बा न हो
- चित्र/नक्शे आदि प्रश्न के साथ या सामने के पन्ने पर होना चाहिए
- टूल की स्कोरिंग गाइड या मार्किंग योजना क, ख, ग, घ विकल्पों के बीच संतुलित रूप से वितरित होनी चाहिए

### 3. स्कोरिंग गाइड का नमूना

नक्शे को देखकर जवाब दें - आपके अनुसार जौनपुर गाँव में 2 कुएँ क्यों हैं?



स्रोत- लर्नर असेसमेंट स्टडी, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन

**सही उत्तर: कोड A/ पूर्ण अंक**

विद्यार्थी कोई ऐसी वजह बताती है जो नक्शे में जौनपुर गाँव से जुड़े किसी तथ्य से सम्बन्धित है।

उदाहरण,

1. चूँकि वहाँ ज़्यादा घर/झोपड़ियाँ/लोग/आबादी है इसलिए पानी की ज़्यादा ज़रूरत है
2. फसल की संख्या/विविधता ज़्यादा है इसलिए ज़्यादा पानी चाहिए
3. फ़ैक्ट्री/स्कूल की वजह से पानी ज़्यादा चाहिए
4. चूँकि पड़ोस के सीतापुर गाँव में कोई कुआँ नहीं है इसलिए वहाँ के लोग भी पानी के लिए इसी गाँव पर निर्भर हैं

**आंशिक रूप से सही उत्तर: आंशिक अंक**

**कोड B1:** विद्यार्थी पानी के सामान्य इस्तेमाल से जुड़ी कोई वजह बताता है मगर उसे नक्शे से नहीं जोड़ता

उदाहरण,

1. क्योंकि लोगों को पीने, धोने, नहाने, खाना पकाने आदि के लिए पानी चाहिए

**कोड B2:** विद्यार्थी पानी की कमी का ज़िक्र करता है।

उदाहरण,

1. सूखे/अकाल की स्थिति से बचाव के लिए
2. पानी की कमी से बचने के लिए

**ग़लत जवाब**

**कोड C1:** विद्यार्थी कोई ऐसी वजह देता है जिससे पता चलता है कि नक्शे की ग़लत व्याख्या की गई है।

उदाहरण,

1. चूँकि जौनपुर गाँव में कोई नदी या पानी का अन्य स्रोत नहीं है
2. जौनपुर में आबादी कम है
3. क्योंकि जौनपुर एक बड़ा शहर है

**कोड C2:** ग़लत या अप्रासंगिक जवाब।

उदाहरण,

1. गाँव के बच्चे कुएँ में गिर गए
2. कुओं का इस्तेमाल कूड़ेदान बतौर होता है
3. इससे गाँव की सुन्दरता बढ़ती है

**कोड D: अनुत्तरित**

## References

1. Azim Premji Foundation, 2020, Discussions that emerged during the online Certificate Course on Student Assessment in Practice, Oct 5th-30th, 2020 offered by Azim Premji University.
2. Chomal, A. Azim Premji Foundation, 2013, Large Scale Assessments, Guidelines for Design, Implementation and Institutionalization, submitted to MHRD.
3. Azim Premji Foundation, (2007, 2010) Workshop- Processes of Test Development, conducted by Australian Council of Educational Research, Bangalore, India.
4. National Council of Educational Research, & Training (India). NCERT, 2017. Learning Outcomes at the Elementary Stage.

---

<sup>i</sup> इस आलेख को आँचल चोमल ने लिखा है। वे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ़ कंटिन्यूइंग एजुकेशन में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं। उनसे इस ईमेल पर सम्पर्क किया जा सकता है - [aanchal@azimpremjifoundation.org](mailto:aanchal@azimpremjifoundation.org)

इस आलेख का संदर्भ निम्न प्रकार दिया जा सकता है:

*प्रश्नपत्र विकसित करने के गाइडलाइन, मूल्यांकन रिसोर्सेज़ अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय*

## प्रश्नपत्र विकसित करने के गाइडलाइन

